कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

DOWNLOAD MISSION GYAN APP

कक्षा 10

e कक्षा By Mission Gyan

YouTube

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय–4

औद्योगीकरण का युग

फैक्ट्रियाँ और मजदूर

NCERT

RBSE



फैक्ट्रियाँ और मजदूर?

- फैक्ट्रियाँ होंगी तो मजदूर भी होंगे।
- फैक्ट्रियों के विस्तार से मजदूरों की माँग बढ़ने लगी।
- 1901 में भारतीय फैक्ट्रियों में 5,84,000 मजदूर काम करते थे। 1946 तक यह संख्या बढ़कर 24,36,000 हो चुकी थी।

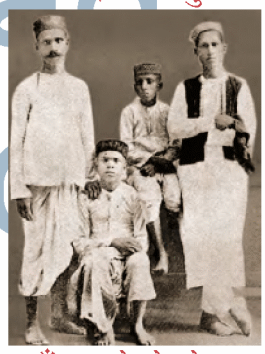
ये मजदूर कहाँ से आये?

- ज्यादातर औद्योगिक इलाकों में मजदूर आस-पास के जिलों से आते थे।
- जिन किसानों व कारीगरों को गाँव में काम नहीं मिलता था वे उद्योगों में काम करने चले जाते थे।
- 1911 में बंबई के सूती कपड़ा उद्योग में काम करने वाले 50 प्रतिशत से ज्यादा मजदूर पास के रत्नागिरी जिले से आये थे।
- कानपुर की मिलों में काम करने वाले ज्यादातर मजदूर कानपुर जिले के ही गाँवों से आते थे।
- मिल-मजदूर बीच-बीच में अपने गाँव जाते रहते थे।
- वे फसलों की कटाई व त्योहारों के समय गाँव लौट जाते थे।
- बाद में जब नये कामों की खबर फैली तो दूर-दूर से भी लोग आने लगे।
- जैसे - संयुक्त प्रांत के लोग बंबई की कपड़ा मिलों और कलकत्ता की जूट मिलों में काम करने के लिए पहुंच रहे थे।

जॉबर

- नौकरी पाना हमेशा मुश्किल था।
- हालांकि मिलों की संख्या बढ़ती जा रही थी और मजदूरों की मांग भी बढ़ रही थी।
- लेकिन रोजगार चाहने वालों की संख्या हमेशा रोजगारों के मुकाबले ज्यादा रहती थी।
- मिलों में प्रवेश भी निषिद्ध था।
- उद्योगपति नये मजदूरों की भर्ती के लिए एक 'जॉबर' रखते थे। जिन्हें अलग-अलग इलाकों

बंबई की एक मिल के युवा कामगार, 20वीं सदी की शुरूआत



- जब मजदूर गाँव जाते थे तो अच्छे कपड़े पहनने की कोशिश करते थे।

Download Mission Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

में 'सरदार' या 'मिस्त्री' भी कहते थे।

- जॉबर कोई पुराना और विश्वसनीय कर्मचारी होता था।
- वह अपने गांव से लोगों को काम का भरोसा देकर लाता था।
- वह उन्हें शहर में जमने के लिए मदद देता था और मुसीबत में पैसे से मदद करता था।
- इस प्रकार से जॉबर ताकतवर और मजबूत होते चले गये।
- बाद में जॉबर मदद के बदले पैसे व तोहफों की माँग करने लगे और मजदूरों की जिंदगी को नियंत्रित करने लगे।
- समय के साथ फैक्ट्री मजदूरों की संख्या बढ़ने लगी फिर भी कुल औद्योगिक श्रम शक्ति में उनका अनुपात बहुत छोटा था।

मुख्य-जॉबर



- इस चित्र से जॉबर के अंदाज और उसके कपड़ों से जॉबर की सत्ता का पता चलता है।

बंबई में एक मिल मजदूर वसंत पारकर ने कहा कि –

"मजदूर अपने बेटों को मिल में काम पर रखवाने के लिए जॉबर को पैसे देते थे....।
मिल मजदूर शारीरिक और भावनात्मक रूप से अपने गाँव से गहरे तौर पर जुड़े होते थे।
वह गाँव जाकर फसलों की कटाई करता था।
कोंकणी लोग धान काटने और गन्ना काटने अपने गाँव में जाते थे।
यह एक स्वीकृत व्यवस्था थी जिसके लिए मिल वाले छुट्टी दे देते थे।

भाई भोसले बंबई के ट्रेड यूनियन कार्यकर्ता थे।
1930-40 के दशकों में बिताये अपने बचपन को उन्होंने इस प्रकार याद किया –
" उस जमाने में 10 घंटे की शिफ्ट होती थी। शाम 5 बजे से सुबह 3 बजे तक काम के सबसे भयानक घंटे।
मेरे पिताजी ने 35 साल नौकरी की। उन्हें दमा जैसी बीमारी हो गयी, और वे काम करने से लाचार हो गए.....।
इसके बाद मेरे पिताजी वापस गाँव चले गये।

अहमदाबाद की एक मिल में कताई में लगी मजदूर औरतें



- औरतें मुख्य रूप से कताई विभाग में ही काम करती थीं।

औद्योगिक विकास का अनूठापन

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

- भारत में औद्योगिक उत्पादन पर वर्चस्व रखने वाली यूरोपीय प्रबंधकीय एजेंसियों की कुछ खास तरह के उत्पादों में ही दिलचस्पी थी।
- उन्होंने औपनिवेशिक सरकार से सस्ती कीमत पर जमीन लेकर चाय व काफी के बागान लगाये।
- उन्होंने खनन, नील व जूट-व्यवसाय में पैसे का निवेश किया।
- इनमें ज्यादातर ऐसे उत्पाद थे जिनकी भारत में बिक्री के लिए नहीं बल्कि मुख्य रूप से निर्यात के लिए आवश्यकता थी।
- 19वीं सदी के आखिर में जब भारतीय व्यवसायी उद्योग लगाने लगे तो उन्होंने भारतीय बाजार में मैनचेस्टर की बनी चीजों से प्रतिस्पर्धा नहीं की।
- भारत आने वाले ब्रिटिश कपड़ों में धागा बहुत अच्छा नहीं था।
- इसलिए भारत के शुरूआती सूती मिलों में कपड़ों की बजाय मोटे सूती धागे ही बनाये जाते थे।
- भारतीय कताई मिलों में बनने वाले इस धागे का भारत के हथकरघा बुनकर इस्तेमाल करते थे।
- इस धागे का चीन को भी निर्यात किया जाता था।
- 20वीं सदी के पहले दशक में भारत में औद्योगीकरण के ढर्रे में कई बदलाव आये।
- जब स्वदेशी आंदोलन में गति आई तो राष्ट्रवादियों ने लोगों को विदेशी कपड़ों के बहिष्कार के लिए प्रेरित किया।
- औद्योगिक समूह भी अपने सामूहिक हितों की रक्षा के लिए संगठित हो गए।
- उन्होंने आयात-शुल्क बढ़ाने तथा अन्य रियायतें देने के लिए सरकार पर दबाव बनाया।
- यद्यपि 1906 के बाद चीन भेजे जाने वाले भारतीय धागे के निर्यात में भी कमी आने लगी थी क्योंकि चीनी बाजारों में चीन और जापान की मिलों के उत्पाद छा गए थे।
- फलस्वरूप भारत के उद्योगपति अब धागे की बजाय कपड़ा बनाने लगे।
- 1900 से 1912 के भारत में सूती कपड़े का उत्पादन दोगुना हो गया।

मद्रास में चेम्बर ऑफ कॉमर्स का पहला दफ्तर



- 19वीं सदी के आखिर तक देश के विभिन्न क्षेत्रों के व्यवसायी मिलकर चेम्बर ऑफ कॉमर्स बनाने लगे थे।
- ताकि सही तरह से व्यवसाय कर सकें तथा सामूहिक हितों के मुद्दों पर फैसला ले सकें।

- प्रथम विश्व युद्ध तक औद्योगिक विकास धीमा रहा।
- युद्ध ने एक बिलकुल नयी स्थिति पैदा कर दी थी।
- ब्रिटिश कारखाने तो सेना की जरूरतों को पूरा करने के लिए युद्ध संबंधी उत्पादन में व्यस्त थे।
- फलस्वरूप भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया।
- भारत में बने माल को रातों रात एक विशाल देशी बाजार मिल गया।
- युद्ध लंबा खिंचा तो भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए -

Download Illusion Gyan App

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here

कक्षा 6 से 12 तक के सभी विडियोज देखने के लिए Click करें। Click Here

(i) जूट की बोरियाँ
(ii) फौजियों की वर्दी के कपड़े
(iii) टैंट
(iv) चमड़े के जूते
(v) घोड़े व खच्चर की जीन
तथा बहुत सारे अन्य सामान बनने लगे।

- नये कारखाने लगाये गये।
- पुराने कारखाने भी कई पारियों में चलने लगे।
- बहुत सारे नये मजदूरों को काम पर रखा गया और हरेक को पहले से भी ज्यादा समय तक काम करना पड़ता था।
- युद्ध के दौरान औद्योगिक-उत्पादन तेजी से बढ़ा।
- युद्ध के बाद भारतीय बाजार में मैनचेस्टर की पहले वाली हैसियत नहीं हो पायी।
- आधुनिकीकरण न कर पाने और अमेरिका, जर्मनी व जापान के मुकाबले कमजोर पड़ जाने के कारण ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था चरमरा गयी थी। ।
- ब्रिटेन से होने वाले सूती कपड़े के निर्यात में जबरदस्त गिरावट आई।
- भारत में विदेशी उत्पादों को हटाकर स्थानीय उद्योगपतियों ने घरेलू बाजारों पर कब्जा कर लिया।
- धीरे-धीरे स्थानीय उद्योगपति मजबूत होते चले गये।

LET'S LEARN TOGETHER

Download Mission Gyan App

भारत की सबसे बड़ी शिक्षा क्रांति

PDF का विडियो देखने के लिए Click करें – Click Here